VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

१. महात्मा गांधी की वाणी में पर्यावरण विमर्श

डॉ. संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी
विभागाध्यक्ष हिंदी, को. ए. सो. लक्ष्मी-शालिनी महिला महाविद्यालय, पेझारी.

"There is enough on Earth
for everybody's need,
But not enough
for everybody's greed."

- Mahatma Gandhi

आज विज्ञान का युग है जिसमें असीमित प्रगति और नए अविष्कारों की होड सी लगी है। तीव्र गति से बढता औद्योगिकरण और मनुष्य की अंधाधुंद बढती आवश्यकताओं के कारण पृथ्वी दुषित हो रही है। महात्मा गांधीजी ने भविष्य में मंडराते खतरे को भांप लिया था। वे जानते थे कि मानव सभ्यता खतरें में है। जिनका सामना हम आज कर रहे है। मानव सभ्यता का अंत नजदिक आता देख १९९२ में ब्राजील में विश्व के १७४ देशों का 'पृथ्वी सम्मेलन' आयोजित किया। इसके पश्चात २००२ में जोहान्सबर्ग में 'पृथ्वी सम्मेलन' आयोजित कर विश्व के सभी देशों का ध्यान पर्यावरण संरक्षण की ओर खिंचा। इस संम्मेलन की घोषणापत्र में कहा गया कि टिकाउ और समावेशी विकास के लिए गरीबी उन्मुलन और पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर नियंत्रण बहुत जरुरी है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए विशेष कार्यनीति बनाने और उसे कार्यान्वित करने की आवश्यकता है। परंतु आज भी इन गंभीर चुनौतियों का हल नहीं निकला है। ऐसे वक्त में महात्मा गांधीकी प्रासंगिकता और बढ जाती है। अपनी पुस्तक 'द हिंद स्वराज' में उन्होंने लगातार हो रही खोजों के कारण पैदा हो रहे उत्पादों और सेवाओं को मानवता के लिए खतरा होने की बात कही। आधुनिक सभ्यता में ही उसके विनाश के बीज निहित है अतः मनुष्य को लालच और जुनून पर अंकुश रखना चाहिए। डार्विन के सामायिक चिंतक वेलेस ने भी कहा था — ''पचास साल के अद्‌भुत अविष्कारों और खोजों ने मानव जाति की, नैतिक उँचाई में एक इंच की भी वृध्दि नहीं की है।'' वेलेस ने बिल्कुल सही कहा हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भूलकर तथाकथित आधुनिकता की दौड में शामिल हो चुके है। हमारी स्वार्थी प्रवृत्ति भी नैतिकता के पतन का कारण है। नैतिक पतन ही पर्यावरण प्रदुषण का मूल कारण है। ब्रह्माकुमारीज एवं पर्यावरण विभाग, दिल्ली सरकार की ओर से मानव प्रकृति एवं पर्यावरण प्रकृति में सांमजस्य विषयपर विज्ञान भवन में राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन में इस बात से सहमती दिखी कि मानव जाति को दुख कष्ट और विश्व को विनाश से बचाना है तो नकारात्मक प्रवृत्ति एवं अस्वस्थ प्रतिस्पर्धावाली जीवन शैली को छोडना होगा।

महात्मा गांधीने इस बात को बहुत पहले कहा था। उन्होंने पर्यावरण संबंधी अपने मौलिक विचार अपने साहित्य में और भाषणों में अभिव्यक्त किए है पर्यावरण पर बात करते समय गांधी चिंतन या लेखन में कहीं

भी 'पर्यावरण शब्द' नही मिलता क्यों कि यह शब्द पिछले चार–पाच दशकों से हमारे यहॉ प्रचलन में आया है जो अंग्रेजी के environment का हिंदी अनुवाद है। विकास के युरोपीय मॉडल से सावधान करते हुए पांच अक्तुबर १९४५ को जवाहरलाल नेहरु को लिखे पत्र में गांधी ने कहा था मुझे कोई डर नहीं है कि दुनिया उलटी ओर ही जा रही दिखती है । यों तो पतंगा जब अपने नाश की ओर जाता है तब सबसे जादा चक्कर खाता है और चक्कर खाते खाते जल जाता है। हो सकता है कि हिंदुस्तान इस पंतगें के चक्कर में से न बच सके। मेरा फर्ज है कि आखिरी दम तक उसमें से उसे और उसकी मार्फत दुनिया को बचाने की कोशिश करूं । लेकिन गांधी की इस चेतावनी का असर न भारत के शासकों पर हुआ न विश्वपर जिसके परिणामस्वरुप आज हमारे सामने पर्यावरण का भीषण संकट उपस्थित है इस संकट का समाधान यदि कहीं है तो वह गांधीजी के विचारों में है। जो निम्नानुसार है।

गांधीजी की दृष्टि में जलप्रदुषण

जलप्रदुषण एक प्रमुख, वैश्विक समस्या है जो संपूर्ण जैविक तंत्र के लिए विनाशकारी है। जलप्रदुषण अर्थात जल निकायों जैसे झीलों नदियों समुद्रों और भूजल का पानी संदुषित होना। जलप्रदुषण समस्त जीवं और पादपों को प्रभावित करता है। जल प्रदुषण का मुख्य कारण औद्योगिक क्रियाओं के फलस्वरुप पैदा हु प्रदुषकों को सीधे जल में विसर्जित कर दिया जाता है। इन हानिकारण पदार्थो के जल में मिलने से जलप्रदुष बढता है। जल मनुष्य की मुलभुत आवश्यकताओं में से एक है। मानव स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ जल क होना नितांत आवश्यक है। जल के अभाव में मानव सभ्यता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारत गंगा नदी जिसका आध्यात्मिक और धार्मिक महत्त्व है। आज गंगा मैली हो गई है। रासायनिक कचरे से भर ग है ऐसे स्थिति में महात्मा गांधीजी के विचार याद आते है – हमारे यहॉ दो से अधिक गंगा जमुना है। ये ह स्मरण कराती है कि जिस देश में रह रहे है उसके लिए हमें कितना त्याग करना चाहिए। यह बहने व प्रक्रिया प्रतिक्षण अपने को शुध्द करती है। मानों हमें स्मरण कराती हो कि हमको भी इसी प्रकार अप शुध्दीकरण करते रहना चाहिए। आज की आपाधापी में हमारे लिए नदियों का मुख्य उपयोग यहीं रह गया कि हम उनमें अपनी गंदी नालियों का पानी उंडेल दे और इस प्रकार में उन्हें और भी अधिक गंदा कर हमारे पास इस बात के लिए समय नहीं है कि हम उनके तटों पर टहले और शांत भाव से ध्यान लगाव सुने कि वे अपने मर्मर ध्वनि में हमें क्या संदेश दे रही है।

अकाल और पानी की कमी के संदर्भ में महात्मा गांधी के विचारों को याद करना बहुत ही आवश्य है। गुजरात के काठियावड क्षेत्र में बार बार पडते अकाल के कारण वे चिंतित हुए और उन्होंने रियासतों सलाह दी थी कि "सभी को एक संघ बनाकर दीर्घकालिक उपाय करने चाहिए और खाली भूमि पर लगाने चाहिए। उन्होंने वनों के कटने का भी सख्त विरोध किया था। अंधाधुंध जंगलो की कटाई से प्रकृति संतुलन बिगड रहा है अत: खेती, वन तथा जंगलों का योग्य तरीके से रखरखाव करना चाहिए।" पर्याव को बिगाडने का काम वनों की कटाई से हुआ है। वन कटते गए धरा संतुलन में खडे पहाडों का अस्ति समाप्त होता गया। मानव को अब समझ आ जानी चाहिए कि वृक्ष है तो जल है जल है तो कल है।

गांधीजी की दृष्टि में वायुप्रदुषण

आज वायुप्रदुषण एक गंभीर समस्या है। सारी धरती मानो पुकार रही है शुध्द हवा की जरुरत है क्योंकि जीवन बहुत खुबसुरत है परंतु विज्ञान ने वायुप्रदुषण के रुप में मानव को अभिशाप दिया है। भारतीय शहर वाहनों और उद्योगों के उत्सर्जन से प्रदुषित है। सडक पर वाहनों के कारण उडनेवाली धूल भी वायुप्रदुषण में योगदान देती है। अनेक बच्चे अस्थमा से पिडित है। गांधी जी सही कहते है – "क्या तेज गति से दौडनेवाले वाहनों की वजह से संसार कोई बेहतर जगह बन गई है? क्या इनसे मनुष्य की भौतिक उन्नति हुई है? क्या अंततः ये उस उन्नति में बाधक नहीं है? और क्या मनुष्य की महत्वकांक्षा की कोई सीमा है? एक समय था जब हम कुछ घंटे प्रति मील की रफ्तार से सफर करके संतोष का अनुभव करते थे; आज हम एक घंटे में सैंकडों मील तय करना चाहते है; एक दिन शायद अंतरिक्ष में भी उडना चाहेंगे। परिणाम क्या होगा? केवल अव्यवस्था।" प्रकृति ने हवा हमें मुफ्त में दी है परंतु आधुनिक सभ्यता ने उसकी किमत तय की है। १ फरवरी १९१८ को अहमदाबाद में उन्होंने भारत की आजादी को तीन मुख्य तत्वों वायू जल और आनाज की आजादी के रूप में परिभाषिक किया था १०१ साल पहले उन्होंने जो कहा वह आज हमारे बुनियादि अधिकारों में शामिल है। शुध्द हवा, शुध्द पानी और पर्याप्त भोजन। १०१ साल पहले गांधीजी की दूरदृष्टि, समझ, चेंतन आज भी समकालीन बनते है।

भारत में वायुप्रदुषण का सबसे बडा कारण है उद्योगवादी और उपभोगवादी संस्कृति। प्रकृति के नियमों के खिलाफ अप्रत्यक्ष रुप में मानव ने मानो अभियान छेड दिया है। कारखानों की अंधाधूंद स्थापना, कारखानों से निकलते धुँए ने वायू में जहर घोल दिया है। इसलिए गांधीजी औद्योगिक सभ्यता को एक बीमारी मानते है। उन्हें डर था कि उद्योगवाद मानव जाति के लिए अभिशाप न बन जाए। रुस का उदाहरण देकर गांधीजी कहते है – "जब मैं रुस की तरफ देखता हूँ जहाँ औद्योगीकरण का चरमोत्कर्ष हो चुका है तो मुझे वहाँ का जीवन स्पृहणीय प्रतीत नहीं होता। बाइबल की भाषा का प्रयोग करुँ तो अगर आदमी की पूरी दुनिया मिल जाए और बदले में उसकी आत्मा नष्ट हो जाए तो उसे मिला क्या? आधुनिक शब्दों में अपनी व्यक्तित्व खोकर मशीन का सिर्फ एक दाता बन जाना मानव गरिमा के अनुकूल नहीं है। मैं चाहूँगा कि प्रत्येक व्यक्ति समाज का ओजस्वी और पूर्णतः विकसित सदस्य बने।"

अहिंसा से वैश्विक शांती और पर्यावरण संरक्षण

अंहिसा मनुष्य का परम धर्म है। किसी को न मारना इतना ही सीमित अर्थ नहीं है अहिंसा का। गांधीजी के अनुसार कुविचार, उतावलापन, मिथ्या भाषण, व्देष हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है और स्वगत के लिए जो आवश्यक है उसपर कब्जा रखना भी हिंसा है। वर्तमान स्थिति में मनुष्य अंहिसा के तत्व को भूलकर युध्द की ओर झूका है शस्त्रीकरण की होड सी लगी है सभी देशो में। गांधीजी ने भविष्य की भयावह परिस्थिति का अनुमान लगाते हुए कहा – "शस्त्रीकरण की होड कायम रही तो परिणामस्वरुप ऐसा विषण नरसंहार होगा जिसकी मिसाले पूरे इतिहास में नहीं मिलेगी।" आज परमाणु बम जैसी विध्वंसक शक्ति भी देशों के पास है। यह एक महाविनाशकारी हथियार है जो भारी मात्रा में उर्जा छोडते है। इसे कहीं गिरा या जाय वहाँ जीवन का निशान नहीं रहेगा। पेड–पौधे भी उग नहीं पाएँगे। जापान के दो शहर हिरोशिमा

और नागासाकी का उदाहरण हमारे सामने है। दोनो शहर बेचिराख हो गए थे। गांधीजीने अणुबम का अर्थ विनाश ही माना था। परंतु उन्हें विश्वास था कि विश्व में सत्य और अंहिसा सर्वोपरी शक्तियाँ है इनके सामने अणु बेअसर है। मानव को इस बातका ज्ञान कर लेना चाहिए कि अच्छाई का परिणाम अच्छा होता है उसी प्रकार बुराई का परिणाम केवल बुरा ही हो सकता है। विश्व परिसंघ का ढाँचा केवल अंहिसा की नींव पर ही खडा किया जा सकता है। आंतर्राष्ट्रीय मामलों में हिंसा को पूरी तरह त्याग देना चाहिए। आंतर्राष्ट्रीय स्तरपर टाइम मैगजीन जैसी पत्रिका जो विदेशी देशों का मुख्य पत्र है वह अब ग्लोबल वार्मिंग के खतरों से बचने के लिए गांधीजी के रास्तों को अपनाने की बात कह रही है।

शाकाहार और पर्यावरण संरक्षण

यह सोच भी अंहिसा के साथ जुडी हुई है। दरअसल उनके सारे मौलिक विचार एक दूसरे के साथ संलग्न है जिन्हे एक माला में पिरोया गया है।

गांधीजी शुध्द शाकाहारी भोजन के पक्ष में रहे है। उनकी धारणा रही है कि "मांस भक्षण मनुष्यों के लिए नहीं है। यदि हम निम्नतर पशु–जगत से श्रेष्ठ है तो हमें उनका अनुकरण नहीं करना चाहिए। अनुभव सिखाता है कि जिन्हें अपने मनोवेगों पर नियंत्रण पाना हो उनके लिए मास–भोजन अनुकूल नहीं पडता।" मांसाहार से पर्यावरण का –हास होता है। मांस प्राप्त करने के लिए मनुष्य शिकार करता है। परिणामत: अनेक प्रजातिया खत्म हो गई है। और हो रही है। खाद्य शृंखला और खाद्य जाल नष्ट हो जाते है। और पर्यावरण का संतुलन विघड जाता है। मानव मांस के लिए पशुपालन, कुक्कुटपालन से दुर्गंधी फैलती है। संक्रामक रोगों के फैलने से अनेक मुर्गीयों को वैसेही फेंक दिया जाता है जिससे वायू प्रदुषण बढता है। पाले हुए पशुओं के भोजन के लिए वृक्षों को तोडा जाता है। मत्स्यखेती से भी खाद्य शृंखला टूटती है। मछली के जाल में बडी मछलियों के साथ छोटी मछलियाँ भी फँस जाती है परंतु उनको वैसे ही बंदरों पर फेंक दिया जाता है। बडी मछली का खाद्य छोटी मछली होती है परंतु यहाँ उनके भोजन पर मनुष्य आक्रमण करता है। खाद्य शृंखला नष्ट होने से नदियाँ दुषित होती है पानी में नायट्रोजन का प्रमाण बढ जाता है। अंत: पानी में जलपर्णी वनस्पती बढती है। सद्य:स्थिति में मांसाहार के कारण ही चीन में कोरोना वायरस का प्रकोप हम देख रहे है भारत और अन्य देशों में भी यह संक्रमण रोग प्रवेश कर चुका है। कोरोना पूरी दुनिया के लिए खतरा बन गया है। इस वायरस की उत्पत्ति 'वेट ॲनिमल' से ही हुई है। 'वन हेल्थ' अवधारणा वैसे पुरानी है। स्वास्थ्य प्रणाली में इसे औपचारिक मान्यता देर से प्राप्त हुई। मानव जनवृध्दि होती है घर बढते है परिणाम स्वरुप वरेलू और जंगली जानवरों के साथ मानव संपर्क भी बढता है। फिर एक दूसरे के बीच रोगों के प्रसार के खतरे बढते है। एच.आय.व्ही, जीका, सार्स, मर्स, कोरोना, बर्ड फ्ल्यु, स्वाईन फ्ल्यु, निपाह, इबोला आदि सभी संक्रामक रोग पशु–पक्षियों के संपर्क की देन है। ओआइई के अनुसार मौजुदा मानव संक्रामक रोगों का ६० प्रतिशत जुनोटिक रोग है। अर्थात ये जानवरों से मनुष्यों में भोजन, पानी और पर्यावरण के माध्यम से पैठा होते है। एक्सपर्ट कई बार बता चुके है कि जंगलों की कटाई मनुष्य में जुनोटिक बीमारियाँ फैलने की बडी वजह हो सकती है। मानव जहाँ भी जंगल काटकर अपने घर और खेत बना रहा है। जंगली जानवर भी अपना घर खोजते हुए वहाँ पहुँच रहे है। इंसान और जानवरों के बीच कम होती यह दूरी जानवरों में न जाने

कबसे पल रहे खतरनाक वायरसों को खूला मैदान दे रही है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और गहन खेती पर्यावरण और निवास में असंतुलन का कारण बन रही है।

ऐसी स्थिति में गांधीजी का शाकाहारी भोजन का मार्ग सभी के लिए वरदान है। वे कहते है – "मैं अनुभव करता हूँ कि आध्यात्मिक प्रगति किसी न किसी अवस्था में यह अपेक्षा रखती है कि हम अपने शरीर की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने सहचर की हत्या करना बंद कर दें।"

पर्यावरण संपूर्ण मानवता की धरोहर है परंतु आधुनिकता की आँधी सब कुछ तहस–नहस कर रही है। विकास की जगह विनाश हो रहा है। धरती रेगिस्तान बनती जा रही है। ग्लोबल वार्मिंग की वजह से पृथ्वी का तापमान बढ रहा है। वनों को धडल्ले से उजाडा जा रहा है। सारा संसार युध्द की ज्वालामुखी पर बैठा है। ना शुध्द हवा मिल रही है ना स्वच्छ जल। ऐसे समय में अगर हमने पर्यावरण को बचाने के लिए कोई कदम नहीं उठाया तो हमारा अस्तित्व खतरे में पड जाएगा। पुनःश्च हमें महात्मा गांधी के विचारों को अपनाने की जरुरत है क्योंकि उन्होंने दी हुई चेतावनी शत प्रतिशत सही साबित हो रही है – "समय आ रहा है जब वे लोग जो आज अपनी आवश्यकताओं को अंधाधुंद बढा रहे है और समझ रहे है कि इसी में जीवन का सच्चा सार है और विश्व का सच्चा ज्ञान है, वे अपने कदमों को लौटाएंगे और पूछेंगे; हमारी उपलब्धि क्या है?" हे मानव जागो! अपने मन को टटोलो और हृदय में छिपे दानव को बाहर निकालो। सद्‌भावना की बेल पर प्रेम का फूल खिलाओ! दिनकर की पंक्तिया याद आ रही है –

"झड गयी पुँछ रोमान्त झडे
पशुता का झडना बाकी है
बाहर–बाहर तन सँवर चुका
मन अभी सँवरना बाकी है।"

संदर्भ ग्रंथ

- द हिंद स्वराज – महात्मा गांधी
- मंगल प्रभात – महात्मा गांधी
- महात्मा गांधी के विचार – संपादक आर. के. प्रभु, यु. आर. राव
- ग्रामस्वराज – महात्मा गांधी
- संक्षिप्त आत्मकथा – महात्मा गांधी
- downtoearth.org.in By Satya Narayan Sahu
- Jansatta.com